निष्कर्ष:

उरोक्त शोध में मैंने "ग्रामीण सवास्थ्य और वैकल्पिक मीडिया " विषय का चयन किया| जिसमें शोध के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन एवं शोध प्रश्नों के विश्लेषण के दौरान पाया की वैकल्पिक मीडिया या पत्रकारिता वह है जो मुख्य धारा से अलग हो| अर्थात आज के समय में बाजार अर्थात पत्रकारिता से अलग ऐसी पत्रकारिता जिसका उद्देश्य केवल धन अर्जन करना नहीं है, वैकल्पिक पत्रकारिता कहलाता है| लेकिन केवल, आर्थिक, आधार पर ही इसकी व्याख्या नही की जा सकती| वैकल्पिक पत्रकारिता के उद्देश एवं विषय किसी ढांचे या विचारधारा में कैद नहीं की जा सकती| वैकल्पिक पत्रकारिता के अंतर्गत उन्ही माध्यमों को रखा जा सकता है| जो समाज से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर नजर रखे| समाज के शोषित या उपेक्षित वर्ग के मुद्दों पर संवाद एवं विचारों संप्रेषण करता रहे| जैसे-जैसे संचार के नए माध्यम सामने आते है| पुराने माध्यमों की प्रसार संख्या घट सकती है| ऐसे में कई मुख्यधारा माध्यम (प्रसार-संख्या के अनुसार) वैकल्पिक हो सकते है| उदाहरणार्थ : फ़ारसी नाटकों के दौर में नाटक ही भारतीय समाज में जनचेतना फ़ैलाने का कार्य कर रहे थे| लेकिन समय के साथ नए संचार उपकरणों ने नाटक की जगह ली| और नाटक एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में करने करने लगा| हालांकि तब और आज में नाटक के उद्देश्य नहीं बदले हैं|

शोध विषय की बेहतर समझ के लिये ग्रामीण स्वास्थ्य की स्थितियों के अवलोकन से यह पता चलता है कि सरकारी स्वास्थ्य नीतियों की धरातल पर वैसी स्थिति नहीं हैं| जिसकी आवश्यकता है |शोध के लिये सीजी नेट स्वरा में कार्यक्षेत्र में उत्तरदाताओ से अनुसूची साक्षात्कार के दौरान यहाँ तथ सामने आए वो इस प्रकार हैं| 60 प्रतिशत उत्तरदाता परंपरागत चिकित्सा पर विश्वास करते हैं जिसका अर्थ है कि आज भी दंतेवाड़ा जिले की एक बड़ी आबादी छोटी-मोटी बिमारियों के इलाज के लिए जड़ी-बूटी एवं पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही परम्परागत चिकित्सा पद्धति पर निर्भर है। वहीं 34 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक चिकित्सा के लिए सरकारी तंत्र पर निर्भर हैं जो कि यह प्रमाणित करता है कि सरकारी स्वस्थ्य तंत्र द्वार चिकित्सा के लिए दी जाने वाली सुविधाएं अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति की तुलना में प्रभावी रूप से विकसित नहीं हो पायी हैंग्रामीण स्वास्थ संबंधित मुद्दों पर मुख्य धारा की पत्रकारिता का जनता से संवाद लगभग शून्य है जब की सरकारी प्रचार तंत्र इस मामले में औसत स्थिति में है|

ज्यादातर ग्रामीण आबादी प्राथमिक समस्याओं के अलावा अन्य बड़ी बिमारियों के इलाज के लिए सरकारी तंत्र के भरोसे हैं जबकि कई सरकारी रिपोर्ट्स के अनुसार सरकारी ग्रामीण स्वास्थ्य तन्त्र कमजोर नज़र आता है। चाहे वह संरचना की बात हो, मानव संसाधन की बात हो या फिर दवाइयों की उपलब्धता या गुणवत्ता की बात हो।

अस्पतालों एवं चिकित्सा केन्द्रों की कमी है उतरदाताओं में से चालीस प्रतिशत उत्तरदाताओं के गांव में इलाज के लिए कोई अधोसंरचना नही है और केवल बीस प्रतिशत उत्तरदाता ही मुख्य चिकित्सा केंद्र से पाच किलोमीटर या कम दुरी पर रहते हैं ग्रामीण स्वास्थ की संचार व्यवस्था की संरचना आज भी परंपरागत माध्यमों पर आधारित है|

प्राप्त तथ्यों के अनुसार सबरे अधिक 66 प्रतिशत लोगों का संचार परम्परागत माध्यमों पर निर्भर है। 34 प्रतिशत सरकारी संचार तंत्र, 4 प्रतिशत इन्टरनेट और अन्य नई तकनीकों से ठाठ केवल 6 प्रतिशत लोग पत्रकारिता के ज़रिए सरकारी स्वास्थ्य शिविरों की जानकारी प्राप्त करता है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर खा जा सकता है की दंतेवाडा के जिन उत्तरदाताओं से उत्तर लिया गया है, उनका प्रमुख संचार परम्परागत परिकों से ही होता है। सरकारी प्रचार तंत्र की अधोसंरचना अभी भी परम्परागत संचार माध्यमों की तुलना में कमज़ोर है। इन्टरनेट के भूमिका नहीं के बराबर है ठाठ पत्रकारिता में स्वास्थ्य शिविरों का प्रचार प्रसार भी नकारात्मक है।

शिविरों के साथ योजनों एवं अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रचार प्रसार में सरकारी तंत्र ज्यादा सक्रीय है। उत्तरदाताओं मेंसे 66 प्रतिशत लोगों को यह जानकारी सरकारी तंत्र से मिलती है। जबकि व्यक्तिगत या परंपरागत संचार माध्यमों से निर्भरता 22 प्रतिशत है। 6 प्रतिशत लोग इन्टरनेट के ज़रिए जानकारियां लेते हैं। जबकि पत्रकारिता का योगदान केवल 6 प्रतिशत है।

ग्रामीण स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर मुख्य धारा की पत्रकारिता का जनता से संवाद लगभग सुनी है, जबकि सरकारी प्र्चार तंत्र इस मामले में औसत स्थिति में है|

सरकारी एवं गैर सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रचार-प्रसार तथा क्रियान्वयन में सरकारी प्रचार-प्रसार को जानने के लिए उत्तरदाताओं से मिले तथ्य सरकारी प्रचार-प्रसार तंत्र के प्रति सकारात्मक हैं। 50 प्रतिशत उत्तरदाता मानते हैं, सरकारी प्रचार तंत्रों की उपस्तिथि की वजह से उन्हें योजनाओं की जानकारी सही तरह मिल रही है। 2 प्रतिशत लोग मानते हैं की सरकारी प्रचार-प्रसार तंत्र को सबसे अच्छा माध्यम मानते हैं। 20 प्रतिशत लोग संतुष्ट हैं। 14 प्रतिशत लोग मानते हैं कि अभी सरकारी प्रचार-प्रसार में काफी कमियाँ हैं।

सीजीनेट स्वर द्वारा संचार बेहद वैज्ञानिक और तर्क पूर्ण तरीका उपयोग में लाया जाता है ग्रामीण जनता से संवाद स्थापित करने ले लिए सीजीनेट स्वर ने एक अलग दल बनाया है यह यात्रा दल ग्रामीण जनता के बीच जाकर गीत नाटक कटपुतली अदि परंपरागत संचार माध्यमों का प्रयोग करता है |गीतों एवं नाटको की विषय वस्तु भी ग्रामीण जनता की पृष्टभूमि के आधार पर तय की जाती है नाटक एवं गीतों के बाद दल यात्रा द्वारा ग्रामीण लोगो की समस्या या साहित्य संग्रहित किए जाते है और साथ ही गाँव के कुछ युवाओं को कार्यालय बुलाकर दो से तिन दिनों की तकनीकी प्रशिक्षण

भी देते है इस तरह से हर क्षेत्र में सीजी नेट द्वारा लोगो को पत्रकारिता के प्रति जागरुक किया जा रहा है और पत्रकारिता उनकी भागीदारी सुनिश्चित करता है तपश्यत रिकार्ड की गई खबरों को वेब पर प्रसारित किया जाता है महत्वपूर्ण बात यह है की संदेश के साथ समस्या से संबंधित अधिकारी का संपर्क भी होता है और अपील की जाती है की ग्रामीण जनता की समस्या आधिकारी तक पहुचाई जाए सीजीनेट का विभिन्न पक्ष में आंकलन करने से यह पता चलता है की यह लोकतांत्रिक पत्रकारिता अर्थात पत्रकारिता में लोकतंत्र को आधार मानकर कार्य कर रहा है| और इसके द्वारा प्रसारित कई समस्याओं का भी समाधान भी हुआ है|